बालिका विद्या पीठ

दिनांक -02-04-2020। विषय – हिन्दी (नवकिसलय) कक्षा -सप्तम

पंकज कुमार

पाठ 1 भारत अपना देश (कविता)

श्रीप्रसाद

जन्म - **05** जनवरी 1932

निधन - **12** अक्टूबर 2012

जन्म स्थान - पराना गाँव, आगरा,उत्तर प्रदेश, भारत।

कुछ प्रमुख कृतियाँ- मेरा **साथी** घोड़ा, खिड़की से सूरज, आ री कोयल, अक्कर बक्कर का नगर

बाल साहित्य भारती सम्मान -1995

शब्दार्थ –

माटी।	-	मिट्टी
विश्व।	-	संसार
निराला।	-	अनोखा
कामना।	-	इच्छा
धरा।	-	धरती
स्वतंत्र।	-	आजाद

संकेत :-भारत अपना देश ----------विखराता।

प्रसंग :-प्रस्तुत कविता में कवि ने भारत के अतित का गौरव गान किया हैं तथा स्वतंत्रतापूर्वक एवं स्वतंत्रता पश्चात भारत की दिशा एवं दशा का वर्णन मनोरम रुप से किया हैं।

भावार्थ -कवि को भारत देश एवं इस देश की मिट्टी से बहुत अधिक प्रेम हैं। वह ईश्वर से कामना करता है कि विश्व में भारत की शान दिनों दिन बढ़ती जाए।

कवि भारत के गौरवपूर्ण अतीत का स्मरण करता है, तो वह उसी समय दुःखी हो जाता है ,जब भारत अंग्रेजो की दासता सहन करने को विवश था। वह सोचता है की वास्तव में भारत सोने की चिड़िया था, भारत के पास अपार धन सम्पदाये थी। भारत के पर्वत, श्रखलाएँ, नदियाँ सब कुछ बेहद निराला था, कवि को इस बात का अभिमान है कि भारत ने इतने देशों को झेलकर भी अपनी छवि कभी धूमिल नहीं होने दी। स्वतंत्रता के पश्चात हम सब भार वासी पुनः भारत को स्वर्ग बनाने के लिए तत्पर हैं हम सब अपने कठिन परिश्रम से भारत को फिर से सोने की चिड़िया बनाएगे। कवि भारत वासी प्रिय जनता को उत्साहित करते हुए करता है, कि अभी हमारे देश का गौरव

हिमालय हमारे साथ है, जहाँ सूरज प्रतिदिन हसता हुआ उगता हैं और हम सभी को प्रेरित करता है। हमारा भारत खोया हुआ गौरव पुनः प्राप्त कर लें, यही कवि की अभिलाषा हैं।